

‘सुदामा चरित’

(निरुद्ध भाषा लिख्यते)

दोहा

श्रीपति पद सिरनाय, मंगल मुद दारिद्र हरन ।
गणपति चरख मनाव, चरित सुदामा कहिय किहु ॥

चौपाइ

विप्र सुदामा दीनक मूल,
हरि परिचर्या मध अनुकूल ।
पंडित विज्ञावस्त सुजान,
तत्पर पूजा पाठ पुरान ॥
जो हरिद्र तौ मन नहि छोड,
वितनहि परिधन देखने खोड ।
नहि किछु विभव ने खेत पथार,
नहि गृहि किछु जथा परफार ॥
तद्यपि रासु ने ककरो भास,
भक्ति पच्छ ने दृष्य दुलास ।
कटुखन भिच्छा माँगे जाथि,
ताहो मे दुष्म वेकती खाथि ॥
नहि तौ फल मूल करयि महार,

नहि किछु करधि वृत्ति व्यवहार ।
 कय दिन साग अनोने प्राप्त ।
 कय दिन सुखले परधि वपास ॥
 काठ कमण्डल सेहो पुरान,
 विप्र दीनता के नहि जान ।
 डाँड़ डराडोरि मूजक जोरि,
 नव वस्त्र केर दाम ने कौधि ॥
 तीर्थ वसन फाटल कय ठाम,
 किछु वपाय नहि रामक नाम ॥
 घरक बार पर खदक ने बाट,
 दुदल मङ्गला दुदले टाट ॥
 नित्र बन्धु परिवार निहारि,
 कयो लय करताइ खोन पुकारि ॥
 जाहि सरोवर नीर सुखाय,
 पंडो कोन साहि ठाम जाय ॥

दोहा

पथिको पतकर तक रर, नहि वैसधि नहि जावि ।
 लहिना पाहुन परक केयो, द्विज घर देखि पड़ावि ॥

सोरठा

जळ ने बरिसय मेघ, तदाँ की वपजा होय शशि ।
 विनु लयम बिनु मेघ, बोद भरे की होय थित ॥

(३)

चौपाइ

सुकी सुनाम सुदामा नारि,
 असन बसन बिनु मलिन दुखारि ।
 तौ पातिप्रद धर्महि लीन,
 पति सेवा मे परम प्रवीण ॥
 स्वामि वचिष्ट मुदित मन खाधि,
 दासी भेलि रहधि दिनराति ।
 महाप्रेम दिव अचिन सुकीय,
 विष्णु जेना लक्ष्मी काँ प्रीय ॥
 गोपीजन काँ जेना गोपाल,
 श्रीनन्द नन्दन कृष्ण कृपाल ।
 श्री गौरी काँ शंकर वाम,
 श्री सीता काँ जहिना राम ॥
 जेना सती काँ प्रीय पति इन्द्र,
 श्री रीहिन काँ जहिना चन्द्र ।
 जेना स्वहा काँ अग्नि पोधार,
 तनुवत सुकीक धर्म वेधहार ॥
 धर्म विना सब दुरेत गात,
 प्रल बिनु जेना पुरैनी पात ।
 धर्मरता निय सुखसक हीन,
 दिनुक चन्द्रमा जेना मलीन ॥
 केरव विना जेना सुख पान,

रौदिक मारल जहिना धान ।
 गहना गिरह ने एको थीक,
 पहिरन वस्त्र पुरान अधिक ॥
 तेन बिना कसो उद माथ,
 छुछे गर छुछे जुग हाथ ।
 छुछे नाक कान सभ अंग,
 काजर बिना तेन मरम ॥
 कोन धराना दिनवा डुरै,
 ज्ञासथ को से नहि किछु पुरै ।

दोहा

पहन दसा सौं काटु तिय, दिवा राति निज धाम ।
 ककरहु सौं नहि कामना, जपहि राम केर नाम ॥

सोरठा

जो जो दिनवा बाढ़, तो तो धक मन धेरजता ।
 तन मन सौं हएगाढ़, जपहि निरन्तर हरिसरन ।

कवित्त

जो मुराभा नारि सुखी मन वस्त्र बिनु दुखी ।
 नो पनि संवा मे सुखी प्रभुलित रह बित ।
 स्वयं के करधि सोखा की हित कनिक भित्ति ।
 हमरा रहेव ईका होखै किछु धन बित्त ।
 अही तो जनैको प्रिय संसार सुभाष तिय

बनल रहैए दिम धन ईका नित निष ।
 बनही सौं हो संतोष आवर करेए लोक
 कटए विपति सोक जगज बढे धित ।

चौपाह

कतहु करहु प्रिय आचन जाए,
 घर बेसने नहि हैत उपाए ।
 अहाँक छाहि ककरा हए कदव,
 कतेक दिवस दुख दुर्गति सहव ॥
 उद्यम कइ किछु की नृप भेंट,
 जाहि सौं जन्न खाइ भरि पेट ।
 हाथ पैर नासा हग कान,
 देने छथि समटा भगवान ॥
 बिद्यावान सुपंडित छी,
 विप्र सभा मय मंडित छी ।
 चारु वर्ण रालि नित धर्म,
 सकल करए संसारी कर्म ।
 सेवल चित्त धरई नहि छी,
 किए उपाए करइ नहि छी ।
 जनिवहि छी जग केर व्यवहार,
 बिनु बयम नहि मिलहि अहार ।
 गृह कुल धर्म धरौने छी,

તસ્યન કિયા ખનઠીને લી ।
 પદને મન જો પદિનહિ બલ,
 તરૂંસન જૈતહુ વનમે બલ ॥
 માય લગપિતહુ ખ્યાન સમાધિ,
 કવિ લય સહિતહુ બોદ ઉપાધિ ।
 સે તેજિ પર રહિ કેલ વિવાહ,
 ગૃહપતિ મેલહુ નારિ કેર નાદ ॥
 કરે પરત સે અવશિ ઉપાર,
 જાહિસોં દુર્ગ દરિત્રા જાપ ।
 સકલ કદૈબલિ વરામ હીન,
 બિપ્ર સુદામા હીન મલીન ॥
 વિનુ વવાવ પર બૈસલ રહ,
 તકરા સમ કેમો અદવી કહ ।

દોહો

રહિ વિધિ સુકો સુમ્મપકૈ, મહુ મકાર કહુ વૈન ।
 જાહિ સમય વિત્ત ધિર ને રહ, હરે જાગુ દગ નૈન ।

સોરઠા

જેના હયત ખાનન્દ, સે રૂપાય શક જાનુલિયા ।
 પે કાટત હે કન્દ, વિનુ નન્દ મન્દન સાવરો ।

કવિત

સુનિર્વાહ નારિ વૈન, બિપ્ર ને રહલ વૈન ।

નીર ઢરિ આથ નૈન, કિહુ ને કહલ જાપ ।
 કહુ પુનઃ સુનુ વામ, જાચન ઉદામ કામ
 લકર લહત નામ, ધિર ને રહલ જાપ ।
 માંગિ મિત્તા નિત્યસાયલ, કકરી ને આસ પેલ
 જાવુને કહિયો વૈલ, નૃપતિ મહલ જાપ ।
 પૂજા જત ધર્મ જાહિ, જાચન માનિકૈ નારિ
 કુષો કર્મ લેત વાદી, કે કરન ટહલ જાપ ॥

ચૌપાઈ

જાચવ મહિ શમ નૃપતિ દુઆર,
 કરે ને અવશજ કિહુ વ્યાપાર ।
 પૂજા વાઠ જાહિ ગિજ ધર્મ,
 હે સમ યોજ પુરોહિત કર્મ ॥
 કુષો કર્મ સો શુદ્ધ કદાયવ,
 વિષય વાસના મેલ પટાયવ ।
 હમરા સે સમ નહિ અજિ તરિ,
 ધન અમિલાપ કરુ તિથ દૂરિ ॥
 ક્રિયા વિદ્યુન બિપ્ર અતિ ખષ્ટ,
 કાપર હો જ્યો સે નષ્ટ ।
 રાજા નષ્ટ ન્યાય વિહીન,
 મંત્રી નષ્ટ જે વિદ્યા હીન ॥
 ધામ નષ્ટ જહોં નહિ રહ વામ,
 ગૃહિ વિનુ ગરુઆર્દ નોઃકામ ।

धिक कुल नारि अभय निरुद्ध,
 येश्या वृथा जे होव ससज्ज ॥
 प्रवित समान कुटिल गति भील,
 दान विना आदर अनुचित ।
 जल विनु सरिता कूप तडाग,
 फूल विनु वृथा वृक्ष वन बाग ॥
 रात्रि वृथा धिक चण्ड विहीन,
 वन्द्या नारि अशुभ सभ हीन ।
 वृथा क्रिया विनु धर्म विचार,
 विनु हरि भजन जन्म भिक्कार ॥
 ते अदि हमरा एतेक सिधान्त,
 भक्ति पन्थ मन रहए एकान्त ।
 धनबल गर्व बिसय कह वास,
 धनबल येश्या संग बिलास ॥
 राज छडि भुव गेलाह पराए,
 सम्पत्ति येने धर्म डराए ।

दोहा

धनबल क्रिया असंभुतिव, धन सो वाङ् धमलह ।
 मन बचल नहि थिर रहे, धन मर परम प्रबलह ॥

सोरठा

कहूँ बहारे राखि, ककरहु सो हं शयला ॥
 चोरक डर रह वाधि, जकरा पहमे धन रहे ।

चौपाइ

हे धिक् निम्दा धन नहि करिअ ।
 सभ प्रकार सर्वस भल धरिअ ॥
 निधने पुरुष धर्म की करह ।
 अपनहि जे खयबा विनु मरत ॥
 सकल हेतु धिक धनक प्रयोजन ।
 नित्य करावैअ आदरण भोजन ॥
 हीन दुखी को सोपिअ दानहि ।
 दिन कुटुम्ब परिजन सनमानहि ॥
 जह तह पोखरि कूप सुनःविष ।
 महल बचल वन बाग लगाविष ॥
 यह नरिय विप्रादिक हेतु ।
 धन धिक भवसागर केर सेतु ॥
 ज्ञानवान जनकी हं सम्पत्ति ।
 उन्धिका सो यमराजो कोपधि ॥
 अज्ञानी जन सर्वस पाय ।
 ज्ञान धन से पाप कमाय ॥
 अह अपनहि स्त्री पुरुष सुजान ।
 धन येने नहि होयत गुमान ॥
 दान करव कत योग्य जायव ।
 नित - नित नूतन पुण्य कमायव ॥

सत्य रही है तारि सोहागिन ।
हमसे पर रहि भेजहु अभागिन ॥
हम तो जन्मके दीन भिखारि ।
से दुख दोसर के देन टारि ॥
आदि उपायों पाविम सर्वत्र ।
अपनाई कहु विचार से यश ॥
जहि सो अपनों पाँवय धर्म ।
सत्य रह्य कुल विप्रक कर्म ॥

दोहा

इ सब ज्ञान मे भाव निम, सत्य धर्म मन्तोष ।
तो आकाश को जाचना, शम्भु नखिल नहि दोष ॥

सोरठा

अपनाई भी भगवान, तबने कवि बलिराज के ।
विश्वामित्र सुतान, दान लेल हरिचन्द्र से ॥

छप्पय

द्वारावति मे कृष्ण राय केर बनि ६ बनल अछि ।
सम राजा केर महागज सिजयंक सुवत अछि ।
अहाँ कहल एक दिवस कृष्ण सो मित्र भाव अदि ।
तेँ द्वारावति जाइ मित्रार सत सुभाव अछि ।
सुनु विप्र नूतन एक उपाय दमरा इ सुकत अछि ।
हुनकहि जाचिब जाय दोसर ते उपाय वृकत अछि ॥

चौपाइ

कृष्णक राज सुनल नहि नारी ।
माथ धुने अछि प्रजक गोआरी ॥
जमुम'तन-दक पुत्र कहौलन्हि ।
हुनू गोटे तकरो कल पीलन्हि ॥
पालल पोमल मित्र सुत जानि ।
दूध पिबय यशोमति रानि ।
ग्याल गोष कथ जानल जेदा ।
अन्त कहौलन्हि देवकीय जेदा ॥
ग्यामी कथ जानल सभ मोपो ।
तन मन धन जीवन देल मोपी ॥
तनिकहु तेनलन्हि न कोन नीती ।
जोदलन्हि कुपरी सँ बिरौती ॥
सैह शुभू गिय ! मनहि विचारि ।
कुबरी कहिया भेलन्हि बिगारि ॥
तकरा कपल सोहागिनि त्याग ।
एहन करत के दोसर काम ॥
जो यशोमति लग कृष्ण भुलैतधि ।
तो देवकि बन्धाहि रहि जैतधि ॥
षट दस सहस राजकुल कन्या ।
मन लागल छल हरि हर कन्या ॥

जो नहि मंजिसधि मजकुल नारि ।
 तो हुनका के लेत उबारि ॥
 रहितधि जो चरवेते गाय ।
 कंसकनाश के करितय आय ॥

मुदामा वाक्य

सकल हमहु उछेद ने करिय ।
 एक बिचार हृदय मह गुनिय ॥
 गुहदिक भवन चिन्हारय भेल ।
 सकल बहुत दिवस धिधि गेल ॥
 आय भेला राजा महाराज ।
 मित्र कहैत हेतन्हि मह लाज ॥

सुकीवाक्य

दोहा

एहन कथा जनु भाषु रिथ, ओ जयि परम दयाल ।
 जे सरनागत गेज अछि, सब धिधि भेल नेहाज ॥

सोरठा

भाव - वरष भगवान, जादि भाव सौ अपदि जे
 आनधि कानिधान, जकरा मन जे कामना ।

मुदामा-वाक्य

चौपाइ

दम धुकै जो ई सब ताल ।
 बिनु नाते नहि दरधि गोसाल ॥
 द्वारपाल छत्र हाथी गोही ।
 ताहि उधार कयल गट ओही ॥
 बन्धुबधू दोरदिक मुनि देरि ।
 आधि वसन मे कपलन्हि देरि ॥
 छल दशरथ केर मित्र जटाय ।
 अग्नि आद्य ते कपलन्हि जाय ॥
 सीय उधार सुधीव सकारल ।
 ते श्रीराम बालिके मारल ॥
 लंकानभेद विभीषण भासु ।
 ते हुनकहु सरनागत गल ॥
 जो अछि दिनते लिखल कपार ।
 से दुख के अछि मेटनिहार ॥

सुकी वाक्य

नाता जो गज - आदक संग ।
 दुख पर कृपा होइन एक रंग ॥
 बली जानि प्रभु पादहि भारी ।
 हाथी काँ परि लेलन्हि उवारी ॥

भोय्य द्रोण सय सभा विराजु ।
 द्रोपदी नग्न समक्ष नहि राजु ॥
 केवल भीदरि शरण पुकारी ।
 ते द्रोपदी नहि भेनी सयारी ॥
 दोन जानि गिधराजहि राम ।
 प्रेम आवि देलन्हि निज घाम ॥
 सरल जानि सुमोद अधीर ।
 ते बाणिक नर मारल तीर ॥
 रुहल विभीषण दित बुध भ्रातहि ।
 से रावत मारल छटि लातहि ।
 ते दरि शरण विभीषण पैल ।
 प्रभु दापो रावत पथ कवल ॥

दोहा

नाथ नहि मानल प्रभु, केवल प्रेम अधीन ।
 सरनागठ पालक बिका, जानिय विद्या प्रवीन ॥

सोरठा

सेतहि प्रीतम नाथ, दुष्टक तावे रिपु प्रवज ।
 समकिलु हुनकहि दाथ, प्राय द्वारिका सरन लिख ॥

कवित

जानु रिया प्रेम नाते भूष प्रदाव और,
 निपादादि नीच जानि गृह त्थारीय लेल ।

गनिक अत्रामिलादि इत्यादि अनेक पापी,
 नाम सुभिरन बल नुग नारिये देल ।
 रिपु नाते नकावान कंव जगाम-आदि,
 शिशुपाल दुर्गोवत दुष्ट के मारिय देल ।
 महावली विरनकसिपु नामी राक्षस के,
 क्रोधे धरि जाँच पर पेट कय फाँटिय देल ॥

दोसर—कवित

विभीषण सुभीषक हीनता के जानु पया
 भेला ई नृपति घर धाराग सरन बला ।
 आगि मे सलिल मे पवने के ने जरैव मरैथ
 भइ लाइ के से भेल जे अंक मे लिखल, लल ॥
 कृपासिन्धु मरन प्रतापे से मेढाय गेल
 आरचय मानत दुष्ट हिरनकसिपु भल ।
 आगु पाहु जनु कह द्वारकाक पथ बल
 अवश्य कुशक भाल मेढाय आयत चल ॥

सुप्पय

ओ मजरथ पर बदनहार हम नीन धिक्कारो
 बैसधि सिधासनहि दुर्ग विष महल अटारी ।
 गज घोड़ा केर ठाठ द्वारि चिन्कार करथि सभ ।
 अनुचर गण बहुधोर जोर अधिकार बगहि मभ ।
 ने घर दाहिने घाम तेजि दूर देस कहियो गेलहु,
 नाथकी दामक दनु प्रिया ने बगरो हम बसि गेलहु ॥

सवैया

जाय कय हम सोई ठाम कर लेव नाम कहव की,
पोरोगन देखि काय, देन भकिआय सरब की।
कटुक कहव करि रोष सहव से होय करव की,
कि देखि गोवता घाट चरक केरि बाट घरव की।

सुकी वाक्य

छप्पय

जो गतरथ पर चढ़निहार श्री कृपा दयनिधि।
तो गत्र शब्द सुनेत पदेरहि भाव कोन बिधि।
सुन शीपरी कर देर उरिलिय यमन, पोर घर।
होय ने दे, अम्ह बचारि सत्रुदहारि सोकि कर।
हुनका लग दानक अधिक आदर हो बनबन्धु सो।
जयवे करु मट द्वारिका सत्य की, हम कन्त सो।

चोपाई

गुरु समीप केर थिका बिन्दार।
दखन पतेक की करिय विचार॥
पहना ठाम किये नहि जायक।
जो नहि मन बांजित फल पायव॥
कोनहु ठाम कतहु जो जायक।
फल तें अपन कपार पायव॥

जो ई वचन कवल परमान।
द्वारावती करव प्रथाव॥
किछु संदेश भेंट मनु लाय।
आनि दिख कय ज्ञान उपाय॥
सोसर जावि आशु मे धरव।
बितती बितस सुखाप करव॥
हुनका नहि सन्देसक काज।
जो अपने दासी महराज॥
आदि दिख सन्देशक चरव।
जुरईल नहि किछु घाटक खरव॥
धानत दाव भिलजि लय कुपरी।
भिलजि बेर लय भिलनी सबरी॥
जो गज दज जज गुहल समूल।
तो एक लोहि चदोलक फूल॥
सुनि कय सुदामा वचन श्यानी।
पावेक जड करही देल आनी॥
आचर कारि बाहि से देल।
अटहास हंसि। आश्रण लेल॥
मेवा मधुर देखि नृप जनिहका।
कोना देख जव करही तन्त्रिका॥
हमरहि तो देखि होइल साज।
तकरा कोना लेताइ मजराज॥

सोरठा

पैह विपत्ति हम जानि, नृप याचन छोड़ने छलहुं ।
कहल नारि केर मानि, परलहु रिपदा फन्दने ॥

चौपाई

बहु दिस देखिय नृपगण भीर ।
हाथी घोड़ाक झुंड गंभीर ॥
देवगण आवधि दरान हेतु ।
नारदादि सुनि ओ नृपकेतु ॥
सगत महल धरि बड़ाइ घोज ।
सुनल ने जाइछ कहरो बोल ॥
मल्ल युद्ध होइछ कय ठाम ।
हर लगेण से सुनितहि नाम ॥
कय ठाम सीकर बाण्हल बाध ।
देखी नहि फटफट हर लाग ॥
बिनु आदेश जे भोतर जाय ।
रछक सों गरवनिचा खाय ॥
बड़ आरच्ये श्रिया केर पाय ।
एहना सों कह मिश्रक नाव ॥
हम भिक्षुक ह नृपति नरेश ।
ताहु पर देल फरहि सन्देश ॥
के अलि एहन जगत कोन ठाम ।
फरही जेत देत धन धाम ॥

जनलहु सहजहि भेंट मुरारीक ।
मानल ते हम कहिनी नारिक ॥
आम बुझल निज तिरियाक रीति ।
धनहित त्यागल नाह पीरीत ॥
ते ओ कयल एहन उपदेश ।
की करव नम की परवेश ॥
जो कदापि भेटो परि भेल ।
तो एवा केर कल भेटि गेल ॥
जो किछु पुछताह एको बेरी ।
परिचय कहव करव नाह देरी ॥

दोहा

केओ ते साथी संग थोक नहि उपकारी होत ।
से, जो सोचब लो रहव, बैसल गधइत गीत ॥

सोरठा

जें घर जायव छूटि, हरक कय श्रिया भुक्ती ।
एजहुं एतेक दूरि, पछतायव फिरने बहुत ॥

छप्पय

सबस बिनु अम पाय राजगृह सों नहि लाविय
बिनु बुझने ने समुद्रमध्य गुक्तामनि पाविय
बिनु हरि भक्ति ने पाय ताप सन्ताप नसाविय
बिनु केने ने उपाय दुख दारिद्र हटाविय

जाय परी एक बेरि धूँध सरस कवेक ओहि भीरसों
बाँचव तँ धन लय फिरन मरन छुटव दुख पीसों

दोमर छप्पय

राम नाम कय चहल विप्रसभ साँच बिसारन ।
उतरि गोमती अतरि धिम्धुपुर मे पगु धारन ।
द्वारपालगण विकट कय आक्षयहि निहारी ।
लागु कहय सभ कहों रहय ई दीन भित्तारी ।
पहना भीर मतंग मे कोन धराने आवत ई ।
देखे श्री दुर्जन दशा की अमितावा कवल ई ।

चौपाइ

बाधि गेलहु हम दीन भित्तारी ।
सुनि दाता श्रीकृष्ण मुरारी ॥
सुनहु विप्र नहि होयस निवाह ।
हमरहिछों निजु लय फिरि जाह ॥
आगों पवरी रहय कठोर ।
जकर नृपसिगण करधि निहोर ॥
ओहि ठाम विप्र पैर जनु धाली ।
देखिनहि कोधित देत निकाली ॥
अहाँ एहि ठाम ज भलहु कुवाल ।
ओहो मोहि देखि हैत दयाल ॥
जे मधु गोमती पार कतारु ।
हीर भीर मे प्राण सवारु ॥

जकरा बल काटल पथ विकट ।
सहय बपीसाह पवरी निहट ॥
आगों प्रिय कहि आगों कह जाय ।
पवरी कय हम लेष दुभाय ।
आपसु पाय विप्र ओहि ठाम ।
जाय द्वार लग कवल बिभाम ॥
देखलन्हि तहाँ ठाढ़ दंड पानी ।
द्वारपाल पवरी कय खानी ॥
बिजु आपसु जे पैसे द्वार ।
तकरा पर कत दसक प्रहार ॥
से देखि विकल विप्र मन भेल ।
साहस कय कोर आगों गेल ॥
द्वारपाल लग जाय पुकार ।
राम नाम कहि शब्द उचार ॥
सभ द्वारीगण चितवय लागु ।
सभ मिल आपस अक्षय आपु ॥
सदय हृदय सँ लग बैसाभेल ।
कवल जिज्ञास हवा उपजाओल ॥
थिकहुँ तँ हम एक भिक्षुक आछण ।
नाम सुशामा दीन प्रसित तन ॥
भित्र थिका श्री पति मशराज ।
पेलहुँ तनिके दरीन काज ॥

दोहा

सुनिम मित्र ई वैन पुनि, भापु ने मुखमे जा
देवराजकेर दर्प नहि, मित्र कहोताइ जानि

सोरठा

ताकय सभ एक टक्क, मित्र बचन सुनि मित्रकेर
जे ककरो महि सकक, से कुवेन सुनु मित्रमुख

चौपाइ

व्यास वृद्धस्पति मारव सुनि ।
ककरो मुख ई बचन ने सुनी ॥
महाँ तो मित्र भिखारि कहावी ।
मित्र बचन कहि लोक हसावी ॥
सुनु सभ द्वारपाल सजान ।
हमरो किछु बचन दयकान ॥
कमल बसय जल सूर्य अकारा ।
जलज मित्र दिनकर कवि भाग ॥
बग्नक मित्र अकोर कहावे ।
दासर पर से मन नहि लावे ॥
जो भिखारि हो राजाक मित्र ।
नहि अचरज से नहि कोनो चित्र ॥
करिय कृपा कय पतन। काम ।
जाहि ठाम बैसल छथि महाराज ॥

कइय सुदामा विप्र भिखारि ।
भाबि द्वार पर परधि मुझारि ॥
ई सुनि द्वारपाल भेल हविष ।
भीतर महलहु आय सभव चिष ॥
कर जोरि कहलन्हि क'पितगास ।
कइय अचरज लगल जात ॥
द्वार एक आलण अछि भिखूक ।
ओ सरकारक दर्शन — इच्छुक ॥
दया घटल सन बोलक जेठ ।
कइय करष ओ कृपाक भेंट ॥
हमर धिकाइ से मित्र ईथार ।
ते हम पेजहुँ पडि दरबार ॥
से बार्ता सरकार जनाबी ।
करष जेहन आयसु केरि पाबी ॥

दोहा

द्वारक रखा हेतु हम नियत रही नित द्वार ।
बार्ता आगत शुभ अशुभ कहि जताबि सरकार ॥

सोरठा

आलण महा भिखारि होनक वाग्न दुर्वल दशा ।
मेत्री बचन मुझारि कहय से सुनि अचरज सने ॥

कविच

सुनोव सुदामा नाम खादि देल और काम
तेजि कय महल धाम ठाढ़ पबराय कय ।
रहि गेल पानो आगु पदधान सेहो स्थानि
बाज ने सभारय आगु जले अगुताय कय ।
ठाढ़ि रह राजा रानि आरवनी हृदय भानि
प्रभु मित्रागम जानि गेला बहराय कय ।
नयन नीर आगु करि चरण गुगल धरि
मिलला भांग भरि सुदामा सों पाय कय ।

चौपाइ

सजल नयन श्री कृष्ण कृपाळ ।
मित्र धार धरि रहु तेहि काल ॥
से देखि ककरहु कैय ने रहल ।
सभकाँ मोर नयन सों बदल ॥
जोँ नादक समुझवनि कहुना ।
तोँ हुष मित्र अविह कहु कहुना ॥
अमर कदधि सभ पावि विमान ।
आब भिचु कहि रिह भगवान ॥
हमरहु सभ जोँ होइ मिखारी ।
खनन अक भरि मिलन मुरारी ॥
एहन मिलन ककरहु नहि भेज ।
देखल ने कवहु अनम रिचि गेल ॥

(२७)

मिलइत देखने छी सुधीन ।
मिहु जे बिभिखन तेजि दसमीन ॥
विदा होइत केरि नन्दराय कय ।
देखने छी मधुपुरी जाय कय ॥
एहन प्रेमवस कतहु ने देखल ।
कोन मत पुरय विप्र ई टेकल ॥
मिलल प्रभु जे एना कानि कय ।
गुरुक समीपक बन्धु जानि कय ॥
रे मत मूढ़ कृष्ण प्रभु छाड़ी ।
के धिक तीन लोक ने बाड़ी ॥
अजु से चरण भन लल बल स्वामी ।
रहत ने कोनो वस्तु केर लागी ॥
चरण कमल बिच भमर समान ।
प्रेम अकि रस कहु मन पान ॥
दे यदि पद फौ ध्यान लगावधि ।
वैसले सभ तीर्थक फल पावधि ॥
बिना भाष्य ओहि पदमे ध्यान ।
होय ने कह सभ शास्त्र पुराण ॥

दोहा

सबव अकुरावि सभ कह दुकाय अतिसार ।
खनन महा प्रभु धोर धर जाइ, मित्र केर धार ॥

सोरठा

जेनहि अपने हाथ गेला भवन भीतर महल ।
देखि विप्रकेर गाठ सकुचि गेलो रानी सकल ॥

चौपाइ

कह प्रभु हे सकुचिन छल छाडी ।
आठ तीर भरने भरि काडी ॥
रयागि संकोच लाज वेवहाल ।
शौम मित्र केर पैर पखारु ॥
छथि बड़ पाटक धाकल मित्र ।
चरण धोय कह हाथ पवित्र ॥
हे देखि मित्र कहथि कर मानी ।
एतवा आदर करि की जानी ॥
हे हम पंडित गायक गुनी ।
हे हम व्यास ने नारद मुनी ॥
कपिल बुवाशा ने मुनि गग ।
हीन सुदामा जानय सब ॥
कह प्रभु निहलहु सकल प्रकार ।
महामित्र गुह बंधु इकार ॥
मुनिय मित्र हम कहिय दुआय ।
आइ अहीन चरण दुग पाय ॥
जानिय सबसों दरसन भेल ।
वेकुपठादि भवन भेटि गेल ॥

जीर लेने छथि दासी ठाडी ।
चरन द्विष जे लेब पखारी ॥
मुनि भी मुअ प्रभु केर ई बचन ।
सुयश भापु रेंवगन पथ गगन ॥
सत्य भक्तवत्स भी भगवान ।
सुरनग मुनि कह वेद पुरान ॥
प्रभुता रयागधि दासक हेतु ।
जनिक नाम धिक भवत ध सेतु ॥
महाराजि हकमिनि जगदम्बा ।
परमेश्वरि संसारक अम्बा ॥
जन्हि चरण मुनि ध्यान लगावथि ।
शिव सनकादि अस्त नहि पावथि ॥

दोहा

से जगदम्ब संकोच तेजि आब सुदामा आगु ।
निजकर कमल पुनीत सो चरण पखारय लागु ॥

सोरठा

बैसाचोक द्विज आवि, पद पखारि आसन ऊपर ।
समुख होय सम रानि, बन्धु चरन आवर सहित ॥

चौपाइ

बीरा विप्र आगु देख जानी ।
धीमति कर कोनवधि महारानी ॥

नयनहि नीर प्रमुक्त कय बेरी ।
 भरि आवय पुनवि फेरि केरी ॥
 कान चूकि हसर साँ भेल ।
 जे अहाँ मित्र बिसरि सोहि देल ॥
 प्रभुकाँ राती सकल निहोरी ।
 पुनवि कय बिनसी कर जोरी ॥
 कत नृप अमर द्वारिपर आवधि ।
 सबय करन केर पास कदाबधि ॥
 इन्हो चरण करधि दर बारन ।
 हिनका मित्रता थीक काँन करन ॥
 नही नर्मदा तीरक पाव ।
 माम बन्तिका पुरी प्रकर ॥
 तहाँ बसु गुरु सन्धीपन सुधी ।
 बिद्या हेतु गेलहुँ से सुनी ॥
 बहुत शिष्य पद शास्त्र पुरान ।
 सममे ई मर्याद परधान ॥
 हिनकहि बल बिद्या बहु पदजहुँ ।
 दबिना सोधि गुरुक हम चकलहुँ ॥
 एक दिवस गुरु आका पाव ।
 गेलहुँ मङ्गलम ईन्धन लाव ॥
 वर्षा परव आशु भरि दिन ।
 सब बाधक काँ मित्र प्रवीन ॥

निज सँग बस आवा तर राहु ।
 आहि आहि परमेस्वर भासु ॥
 सबक बचौलन्हि मित्रे मान ।
 नहि तँ होइत आनक आन ॥
 छुटव ने पुनद बरिस एक माँगी ।
 सुखले रह सब ओहि दिनराती ॥

दोहा

ओतय भवन मे श्री गुरु सोचैत रहु भरि देन ।
 श्री गुरु कबु बिलाप करु निन्द ने आवल जैन ॥

सोरठा

कगल महा पक्षताव, बालक बनहि पठायेके ।
 भोम उपाय हो आव, बरला निसदिन बरिसु अन ॥

चौपाई

प्रात होइत सबहक सुधि लेल ।
 दयादृष्टि अतिशय मन भेल ॥
 आगि तपाय बरत्र पहिराओल ।
 दय प्रसाद ओजान करबाओल ॥
 ताहि दिनक मित्रक उपकार ।
 से हमरा पर रहले बार ॥
 एह से बसुदेव देवकी भाय ।
 हिनका सन महि दलधर भाय ॥

पढ़ने ने हमर यत्नामने मन्द ।
 जेहन मित्र छथि आनन्द कन्द ॥
 कहिया स गुह गृह सोँ यत्नहुँ ।
 ई सभ सुधि बिसरिय गेलहुँ ॥
 मित्रहु ने कह्यो सुधि लेल ।
 आइ आधिक्य दर्शन देल ॥
 कुशल छेभ भाव कहूँ हयार ।
 सखा सहित निज कुल परिवार ॥
 हम की कुशल कहूँ है स्नामी ।
 छी अपनई सभ अन्तर यामी ॥
 भितेऊँ दिवस जेना धिक गृहघर ।
 किछु नहि आइ अपनैक अगोचर ॥
 दर्शन भेने सभ दुख गेल ।
 सब पदाय फल मिलि मोहि गेल ॥
 नितहि ध्यान आहि परायक करीब ।
 तसबय धारि अवलम्बन धरिय ॥
 ओर ने जानीय किछु वैवहार ।
 एत कहिय जानय संसार ।
 बिन धन सुनि सारंग पानी ।
 कह प्रभु सुनिय सुमुखि सभ रानी ॥
 भित्र महा छथि सरल स्वभावी ।
 दिनक चरित्र कए की गाथी ॥

दोहा

कहर कही धरि सुन्दरी । मित्रक जे उपकार ।
 तेन दाखना सं गुहक, दिनकहि बल उदार ।

सारठा

बहुत दिवस भनगेल, दिसरि गेलहुँ ते सुधि सकल ।
 दर्श भित्र से भेल, मनपरि आयल सभ कथा ।

चौपाइ

मतिमय महल द्वारका भारी
 चित्रित जगमग अति दुरकारी ।
 भयन विराजित महारागन ।
 अभरन बसन सोहाग भरल जन ॥
 जह छथि अपन कुल्ल सुखी ।
 एह छथि वैभल विप्र भकारी ।
 कहियो ने देखु भितर नृप महल ।
 कहियो ने पढ़न देक सर गहल ।
 देखि विप्र मन अचरज लागु ।
 सज्जन रह सभ रानिक आगु ।
 आइन सभा मध्य लातक ने ।
 पबही लुकवत परलय भन ॥
 अन्तरोन भित्र दोनहि कहिय ।
 धारधीच कय टक टक तह ॥

कहि मनहि मन काधि विचार ।
 कयलि नारि ने किछु उपचार ॥
 सकल मिलल उपदेश ने देल ।
 ई सन्देश कठिन सैह भेज ॥
 यहि चित्तवृत्त ने रहि सुदामा ।
 नाथ सँ हास्य करि किछु बामा ॥
 हे प्रभु नहि अहंकि ठेकान ।
 तेँ प्रभवधूक सोझाओल मान ॥
 राखल रचल वृन्दावन जाय ।
 स्थायल भाखन वही चोराय ॥
 नाथि नाथि प्रभवधू रिभाओल ।
 ब्रजमनहल मे धूम मचाओल ॥
 हुदरी नारि स्वामि के पोलक ।
 दरजी माली मीत कहौलक ॥
 निर्मल मित्र हीन सभ भाति ।
 तेँ देखि अधिक जुड़ावी छाती ॥

दोहा

बिलखि कहल प्रभु मुदित मन खतभामा दिस ताकि ।
 तेँ अहाँ कय कहु ब्राम्हणी मटी भाव अभिलाषि ॥

सोरठा

तट हमरो जँ स्वामि, तेँ हम किएक ने हैव नदी ।
 से मुनि अन्तर्यामि, हसि पुप रहला मुख निरखी ॥

चौपाइ

तखन कहल प्रभु द्विज दिस देखो ।
 सखीक फुशल जेभ कहिय बिसेखी ॥
 कुशल पुछि फेर कह बिलछाय ।
 कि सन्देश देल हमरा जाय ॥
 कोन सन्देश मित्र हम लाएव ।
 किछु न उपाय कहाँ की पायव ॥
 घर नहि घरप लेल धिनु दीर ।
 धनिकी ने कियो बस घर समोप ॥
 भेंटवो नहि कर रीत उपहार ।
 सन्देशक नहि बाट प्रकार ॥
 रुठ प्रभु बसु भेलहु अहाँ जाव ।
 पूर्ण भइत छल शोक स्वभाव ॥
 सहिक-संग मिल भेलहु बासुर ।
 हम ला बहुत सन्देशक आसुर ॥
 जेम करिय हमरो अपराध ।
 देवा मध्य कल मनु बाध ॥
 पोदरी रह द्विज कँल तुकाओल ।
 तहाँ थरि प्रभु निज हाथ बलाओल ॥
 हौ हौ बिज करोत रहि गेल ।
 हाथ पकड़ि पोदरी जिन लेल ॥
 तखन बिपकय बड़भेल जाज ।
 कहि मनहि मन भेल अकाज ॥

एक त कुलुधन हभर नारी ।
 दोसर हभर ने लेल बिचार ।
 तेसर अहूँ ने कयल बिचार ।
 एकहि घर कय देल उपार ॥
 मुनि मित्र जनु मानिय जन ।
 ई मोरक सँ थिक दुइ गुन ।

दोहा

ई कहि जाय सप्रेम सँ निजकर पोठरी खोलु ।
 देखल कहही खबक अहि दुइतीन मुठी अमोल ॥

सोरठा

हाहा काह मृगभासि ई नहि लायल जन्म भार ।
 सिरधरि करमे राखि हाथु प्रशंसा करय विधि ॥

चौपाइ

एहन वस्तु लायल नहि कहिओ ।
 बशीमति भवन गेलहु कहिओ ॥
 जे ते खोलीलनिह देवकी माय ।
 मुमुक्षि सखी से देल पठाय ॥
 मधु मेवा माखन सों भोज ।
 हमरा लग ई फलही थोक ॥
 ई कहि कृष्ण मित्र दिस ताकी ।
 फरही एक मुठी लेल फाकी ॥

जखन जना प्रभु मुखमे देल ।
 से देखि विप्रक जी कहि गेल ॥
 जँ एक हाथ कंठहि गवत ।
 ही बलंक हमरहि सिर पकत ॥
 देखि प्रभु आश्रय विष कदास ।
 कहैत गेलाह प्रकुलिष सब हास ॥
 नन्द भवन हम आचल माँटी ।
 ती मधुमति ठठि मारल साँटी ॥
 गरदत मुखमे किछु महि भेल ।
 दुवानलहु पान कय लेल ॥
 से कहि खगलनिह कहि स्वादिह ।
 आभीरो पर केरि लयलाह दृष्टि ॥
 सोमरो मुठी लेल निज पाय्ठी ।
 खयलनिह बहुतो स्वाद बखानी ॥
 तेसर मुठी पर हाथ चलाओल ।
 वारन कय कहिमाय समुझओल ॥
 तीन लोक जँ दिनकहि देब ।
 अपने वास कतय भय लेब ॥
 तखन महाप्रभु वारल हाथ ।
 कहिगनि सँ हँसि कह ई बात ॥
 कोन अचरज एहि कहही लागि ।
 होथि जँ मित्र तिवपुर भगी ॥

जे किछु कहही रहि गेल सेल ।
 से प्रसाद जय जलन्हि पत्येक ॥
 नयिन वस्त्र भिन्नहि पहिराभोज ।
 खटवस मधुर भोजन करवाभोज ॥
 भोजनोत्तर निशि पहांग सुताय ।
 निजकर मानिय चरन इवाय ॥

दोहा

सुवला बिभ्र अचेत होय लोको सभ ओहि राति
 रहू सब महराती भवन योगनिन्द खां भौति

सोरठा

अपने भी भगवान गेन सज्ज पर चेहु रठी
 बरबकमां कर ध्यान करन्हि भगदु से आवि के ।

चौपाई

आयसु पाय शोघसे जाय ।
 पुरो सुदाया रचल बनाय ॥
 कोठा सोफा महल अटारी ।
 चित्रित बिभ्र भवन सुखकारी ॥
 हय गज शाला हाथी घोड़ ।
 मय गेल ठाम ठाम कय जोड़ ॥
 नोकर वाकर भरल दुभार ।
 धन बिचा सम्पत्ति भेल अपार ॥

कोना भेल से कयो नहि जान ।
 पूर्वहिसो कलि होइ कय माय ॥
 प्रभु लोका तति अगम अगाध ।
 पावय पार ककर बिक साध ॥
 मुक्तिव निन्द पक होय अज्ञान ।
 सम्पत्ति कोना भेल नहि खान ॥
 बसन मुखल अंगहि पकि गेल ।
 गुदगी वस्त्र कहहु बदि गेल ॥
 खोपड़ी भय गेल अन्तर ध्यान ।
 रहल ने लकरो चिन्ह निशान ॥
 तखन महाभय दीन ब्याल ।
 सलि अग प्रगटि गेला तरकाल ॥

दोहा

भवन प्रकाशित से हरख सिरमा बैसलाइ जाय ।
 सखी सखी लचकार मुल सुरती मधुर बजाय ॥

सोरठा

सुनिताइ बांशीक देरि कह सखी सठलि वेहायकय ।
 के पुकाव एहि बेर निशा राति सुतला समय ॥

छन्द

चौकि कय उठलि नाम देखल भवत धाम,
 बिभ्र बिभ्रकारी काम कोन बिधाता है वेन ।

भोपदी दुदल छल से बिलाय गेल चल
 न एहन पयल भल कहै ई क्या भेल ।
 भूपण रागर अंग वसन भल रंग,
 देख मन भेल दंग गुहरी कही दो गेल ।
 स्वर्ग की स्वप्न में छो की आन भवन में छो,
 सुनन अवगु में छो सखी नाम के दो लेह ।

चौपाई

ई कहि नाकल सिरमा विस ।
 देखलन्हि नैसल श्री जगदीश ॥
 माथ मुकुट मोरक पोंख ।
 एहन कसहु देखल नहि भोंख ।
 केश भवम जल अचरारी ।
 जकरा मन होख मोह कारी ॥
 भाल सतल आनन केर देख ।
 बिसा नई धिर रह केकेभो देख ॥
 भुक्ति वक देखि धनुष लजाथी ।
 दूतयाक चन्द्र देखि पराथी ॥
 देखि हयवर नयन लिकाय ।
 खजन नीतक प्रण मग्याय ।
 न सा रंख सुग रह दुरी ।
 लोल उठाय ते ताक धूरी ॥

देखिवहि अपर मरुतल ठोर ।
 वनमे हटले रह तिलकोर ॥
 मकड़ाकन कुकल दुहु कान ।
 मजकय जेहन मगल छधि आन ॥
 कंठ कनक — कंठ दुनिकारी ।
 । व मय बलिहारी बलिहारी ॥
 मुला नख वनमात्र विराजय ।
 पर विशाल पर आति छधि छाजय ॥
 छहर छदार रोमाञ्जलि देख ।
 दंभत ह रह जे पल भरि देख ॥
 दंभ दंभ सिद्ध रहधि नहि ठाढ़ ।
 वनहि पराधि नीच कय चार ॥
 छिकिनि धुनि जन्मादि सतावय ।
 गानय ईसक बकला नाजय ॥
 जानु अंध केर गति बिपरीती ।
 केराक थन्ह पग छलटल रोती ।
 युगल वरन दुति कमलक रंग ।
 जह सँ प्रगट भेनी भीगंग ॥
 सभ अङ्ग छधि वपमा के कहय ।
 जे देवय से देखिनहि रहय ।
 एहन महामनु त्रिभुवन नाथ ।
 बैसल छधि सखि सिरमा कात ॥

405
 405

पुष्पहि रह मुह किछु नहि भाखु ।
 तखन सुखी खिरमा बिहा ताकु ॥
 चरन परछि सिर जगली कानथ ।
 कहि कहि अहँक चरित के जानय ॥
 धन्य धन्य प्रभु अन्तर्यामी ।
 सभक उवर परमेश्वर स्वामी ।
 कयो नहि पावय अपनेक भक्त ।
 अपने धिकहुँ एक भगवन्त ॥
 मत्यमुबन जय स्वयं पताल ।
 सकल अहँक धिक माया जाल ॥
 सभ घट अपनहि पार करैछी ।
 कल्पति पावन नारा करैछी ॥
 जखन भखन होख धनिक धानी ।
 अंशकना भवसार भरैछी ॥
 दुष्ट निरावर देख आवि जत ।
 हति हत पृथ्वी—भार हरैछी ॥
 भय सहाय सरनागत जन पर ।
 भव बाधन सँ पार करैछी ॥
 कत बापी तापी लापी खल ।
 नाम—पताप बघार करैछी ।
 भक्तक सकल दुराय शीन दुख ।
 सुखद करोड़ हथार करैछी ॥

(४९)

कय प्रमान युग वखं रात्रिविना ।
 कीति सृष्टि संसार करैछी ॥
 माया सकल प्रेमाय अन्त मे ।
 प्रलय काल अन्हार करैछी ॥

दोहा

यहू विधि नृति कवल सुखी प्रभुक चरन धाय माध ।
 तखन सखी सम्बोधि कय कहैत भेलाह नजनाथ ।

सोरठा

कहुन प्रेम फेर पंथ जहाँनेम केर मागै नहि ।
 कहयि सकल सद्गुण जहाँ प्रेम तहँ नेम नहि ॥

चौपाइ

जे जन जेह विधि ध्यान लगायय ।
 ताही विधि हमरा से पावय ।
 फल ही मभकौ समुझि जगारथ ।
 हमरहि कर अझि थारि पदार्थ ।
 बिना अहँक विष पर भेल ।
 तेँ हम एतेक सम्पदा देल ॥
 प्रेम प्रवृत्त कय ध्यान जगाभोल ।
 तहँ फल—बल हमरा पाओल ॥
 भक्तधीन वैश यश गावय ।
 आदि अन्त गति कयो नहि पावय ॥

जइवि भक्त अति विविध प्रकार ।
 प्रेम भक्ति समद्वन्द्व धिक सार ॥
 सखी जन्म भरि सुख करैत रह ।
 हमर बरण कर ध्यान करैत रह ॥
 मित्र संग कइ भोग विजास ।
 भय होयत वेकुपठक वास ॥
 जाइन की जाव अपना धाम ।
 बिसरि जाइ जति हमर नाम ॥
 मितहि किछु नहि देखे ते देव ।
 से अपराध जमा कइ देव ॥
 पतवा कहेत माय भगवान ।
 भेला तहाँ लै अन्तर्धान ॥
 जन है दारावति प्रभुजाय ।
 धवन भवन सुतला अलखाय ॥
 ई चरित्र सभ केनो नहि जान ।
 भरि निशि प्रभुकी सुतले मान ॥
 सुतले रह दिन निशि निन्दमाती ।
 जानधि नहि किछु जे गेह राखी ॥
 भाव ठाढ़ दिज मुँह हाथ धोय ।
 कयल बिनय प्रभुसँ मुँह डोय ॥
 भाव दिखस सोन भेल मोसाह ।
 आयहु होव भवन निज जाह ॥

लख सुख लख संपति स्वार्थ ।
 चरन देखि मन भेल कुतार्थ ॥
 सं सुनि कह प्रभु वचन भेलहु हम ।
 मितहि देखि आनन्द भेलहु मन ॥
 जे पसहि आवने रहि मायन ।
 वो हम निज वरस सुख पायव ॥
 तखन बिप्र कह दुम कर मोरी ।
 हे प्रभु बिनय करि कर मोरी ॥
 आहा होय भवन लयवाक ।
 भाव बनल भेल पर मयवाक ॥
 कुशल जेम दुम दिसा जी रहव ।
 दरस परस केरि होयवे करव ॥
 दया दृष्टि प्रभु होय ने पाटी ।
 ई कहि भेल कमयल माटी ॥
 प्रभु उठि बल्लाह विप्रक साथ ।
 बाहर जाय वेतनि अरिमात ॥
 अकम लख लेलहि पद पुरी ।
 चलल विप्र गाऊ नहि पुरी ॥
 मित्र बिदा कय भी बहुराय ।
 बैसला सिंघासन पर जाय ॥
 पतय बिप्र वेतनि गृहि बाट ।
 सुमिरेव प्रभुगुन जाति काट ॥

कृष्ण - महाराजा वध भारी ।
 देवता संपदा महल अगरी ॥
 अथवा—पीवाक बड़ सनमान ।
 कयलन्हि रसलन्हि सभ विधिमान ॥
 देलन्हि ने किछु मोहि चलइक बेरी ।
 भाव न इहरका भावय केरी ॥
 पाओल भक्त फल भेंट इयारक ।
 सत भावति सन्हि रहिने म्हारक ।
 तेँ इभरा किछु इव्य ने देल ।
 अहरक गति बदलज नहि गेल ॥
 एतवद कहै छथि महाराज ।
 माम भेला नकरो नहि लाज ।
 खेलन्हि आइर मानक बेरी ।
 किछु नहि जुइअन्हि इमरा चरी ।
 अथि महाराज किया कर छोट ।
 की मन अवल मधुषा गोड ॥
 बहुल परासा केलन्हि मारी ।
 महलहि हुनको पारव गारी ।
 पाद पलीन मखधि भरिपोख ।
 प्रभु नपर सभ जगयधि दांप ॥
 अन्तरयामी कृष्ण सदाशिव ।
 जल यल नभ तीनु लोकक पिव ॥

कलदित विपक सभ सुनि लेधि ।
 बुभलन्हि निम राप यी देखि ॥
 चलल जधि पथ पुरि नहिताक ।
 पथ योगलन्हि प्रभु अनिकब ताक ।
 पथ लाकनहि मधोलन्हि रगवा ।
 मारवो कयलन्हि एक दुइ बजवा ॥
 कइलन्हि बिम सूर्य छथि साखी ।
 किछु नहि संग किम से ताकी ॥
 तखन बिम पर होइ दयाक ।
 प्राणदान देखक चपकाल ॥
 कहय लागु द्विज प्रासक खेल ।
 भल भेल हरि मोहि बिछु नहि देल ॥
 लेवे करैत सकल छिनि डाक ।
 प्राण बाँचि गेल की भाष म्हाख ॥
 प्राणल जानि छाडि से देलक ।
 सत नहि छल किछु हेँ नहि खेलक ॥
 बुधा कृष्ण पर दोष लगाओल ।
 कनैक लिखल अवन फल पाओल ॥
 जे अछि लिखल दरित्री साप ।
 भेटि नहि सकथि बिधाताक बाप ॥
 एतवा कहि थयलन्हि केरि पंच ।
 सुमिरन करैत ध्यान भगवन्त ॥

दोहा

साव उपस्थित भेलाइ दिन द्वाविह अरमा देरा ।
धाकल मन मांखल जका भेने पवक देरा ॥

मोरठा

गामक महरी आवि कयल मगर विभाम किछु ।
तहतर किछु सुम्प वि चलता नगर प्रवेश दिन ॥

चौपाइ

परकहि सों दिज भांलि पसारी ।
कोठा साका देखलहि भारी ॥
महल अटारी धवध धाम सभ ।
सोन रूपमय जदल काम मभ ॥
बाजे शंटा पकी निशान ।
दोलडाक बजइछ यमलाम ॥
नोबति बाज सिंह दरवाज ।
नरीक नृत्य करय धम मान ॥
गज चिक्कर पोर दिहवाय
लोकक बोल सुनल महि जय ॥
हाट बजार लागु कय ठाम ।
दोसर जेना द्वारका माम ॥
देखि विप्रका लागु अवभा ।
ई को भेल सारदा मन्ना ॥

से कोन ठाम जे पथ भोतिछीनहुं ।
फेर द्वारका की चल अपलहुं ॥
नहि महि एतेक सोच भिक चोक ।
अमने प्राम अपम ई धीक ॥
अनुमानहु भी पूकि पदे अलि ।
ठानि बानि सैं सुम्ह पदे अलि ॥
के रूप बास लेल ई कहिआ ।
छत नहि किछु हम रतलहुं जहिआ ॥
दुटलो घरके देखक बजारी ।
तहाँ वठौलक महल अटारी ॥
ककर पदन भेल रीम मताप ।
नारि कतव गेल आविही बाप ॥
ई दुख भाव कहम हम ककरा ।
मत्र मिलन विषया भेल हमरा ॥
के एहि औरत हयत सहाय ।
देवता कोन मनस्थप जाय ।
ओदरहानी शिव धम भोला ।
से रह मतज खाय भंग गोला ॥
इन्द्रहि जाय कहम की भाखी ।
हुमकहु छेनिह हमारेक ओकी ॥
चन्द्र सूर्य के कहय कि कठी ।
चलवा सैं हुनकहु ने छुट्टी ॥

विधि सों कह्य किवास्तां गूढ ।
 जोहो आव भय गेह अवि गूढ ॥
 मुनि जन रह्य भवान रस मगत ।
 कोन उपकार करि से तखन ॥
 आव केरि द्वारावलि छोर जायक ।
 जेहन जतल से ओतहि अभायक ।
 येह गुन धुनि मे रह्य सुदामा ।
 देखलि अटारि ऊपरस वासा ॥
 द्वारपासनन अचर्य पय ।
 देखान्हि वनह सगसे जाय
 हाथ ओडि विनयो सों कहल ।
 चलल होय प्रभु अपना महल ॥
 सकल सम्पदा जे किछु देखिय ।
 अपनक त्रिक दोसरक अनु लेखिय ॥
 केभी खेल गुना केभी खेल मोरी ।
 कान्ह अटाय वे कगुनी होरी ॥
 तखन विप्र कहलन्हि रिसिआय ।
 कयल ने हम किछु नमहि जाय ॥
 ककरहु सों नहि कयल बिबाह ।
 कयने नहि छी किछु अपराध ॥
 पकरिय घुरिय अन्हेरि कि हेतु ।
 राजालग को होयत से चेतु ॥

सम्यक सुकी लय संग सहेली ।
 स्वामि समीप पहुँचिय गेली ॥
 बसल भुवन सभ अंगहि सोहित ।
 देखि सुदामा मन भेल सोहित ॥
 गहिकर स्वामि घरन धुनि रेल ।
 बदन निहारि हरखि हँसि रेल ॥
 हमहि बटाओल कृष्णक पास ।
 लकर आचत कल भेल प्रकाश ॥
 विपति हरि गेह अस्पति भेल ।
 अन्हि आवि सकल प्रभु देख ।
 महल भवन लज्जमो लज्ज वास ॥
 भेल अर्धक केर पुरा प्रकाश ॥
 माहि मुखा दयाद अनाज ।
 दय गताइ बहु भुख समान ॥
 सभ संयुक्त पुरी गेल जागी ।
 महल ने कोनहु वस्तु केर खागी ॥
 पहिर ओडि मंगलमय साजू ।
 सिधासन पर जाय बिराजू ॥
 एवं भेल वस्तर सन लाव ।
 प्राय भवन राजा सन लाव ॥
 मुनि त्रिय बचत चीन्ह निज नारी ।
 कह्य लागु प्रभुय गुन मन धारी ॥

छन्द

देखि कय अहाँक मुख भेल जे पथस दुख
गेल आव सभ दुख बारि परायकय
अहाँक ऊपर जाय प्रभुकेँ भेलन्ह द ।
देखिन्ह एतेक माय प्रेम भक्ति पायकय
अहाँक मानस भावि विश्वकर्मा कय पठावि
अपनहु गेला आवि राता रानी पायकय
हमरा भेटैटा भेल अचैन जे किछु देख
प्राप्त गोटा बौचि गेल मध्य पथ आयकय ।

चौपाइ

जे गति भेल हारका जाय ।
निश्चित सय से कह्य सुभाय ॥
एतवा कहैत नारि मुख ताकी ।
हब नोर भरि आयल जाँकी ॥
कहैत भेलाह ई सभ जे भेल ।
हमरा नहि प्रभु जानय देख ॥
जे चाहि से करवि ईयार ।
तकरा के अछि भेटनिहार ॥

दोहा

नज इकड़ा सं करधि भमु सकल कार्य बेवहार ।
गोप प्रवेश गणेश विधि क्यो नहि पावधि पार ॥

चौपाइ

अस भेल दिन आगम गद ।
देख्य दौदल मोगी मव ॥
सफल बाहु आयल मोदिठाम ।
पूति भेल सभक मन काम ॥
तखन सुदामा कय असनाम ।
सोपल विप्र दुखी हन दान ॥
गोविन्द भिन्न सुदामा भागी ।
पूर्वक भेल वस्त्र देख रवागी ॥
बनिरि चाँदि राजाकेर साज ।
सिंहासन पर जाय बिराज ॥
भूप भूप कहि भव गेन सोर ।
लोक एकट्ठा भेल जे थोर ॥
बाजय बाजा डोल निराम ।
से सुनि देल जाय नहि काम ॥
कवल प्रवेश सुदामा घाम ।
पूति भेल सभ विधि मनकाम ॥
एहि विधि हर्ष युक्त मुख चैन ।
बिनय लागु दिवस पद रैन ॥
भी हरि मन्दिर परम प्रकाश ।
स्वर्ग रूप सय लागु अकार ॥
भी युव राजा कृष्ण प्रकीम ।

राजित भोजित अनि इमीम ।
 के कहि सक मन्दिर परताप ।
 देखलई नाश होय सभ पाप ।
 भजन गान गुण गण हरि ध्यान ।
 नित हय मंगल द्वार प्रदान ॥
 छप्पन विधि लागय नित भोग ।
 से प्रसाद पावय समलोग ।
 तत्कल काम प्रह धाम अकशित ।
 दोसर द्वारावति होय भासित ॥
 द्वारवती प्रभा हुति पाओल ।
 श्री विरयकर्मा जाहि बनाओल ॥
 श्री शिव मन्दिरादि कवठाम ।
 वन तेज अछि सभ देवक धाम ।
 बहु दिश बापी कूप तराय ।
 सकल बान्द रम्यक बनधाम ॥
 जकरा देखने भमता भाष ।
 दिनता दिनता सकल पराय ॥
 के कह शोभा धाम अगारक ।
 भरल : हो अछि सुख संसारक ॥
 मानहु रिद्ध सिद्ध लेल वास ।
 लक्ष्मी अवतार करथि निवास ॥

छप्पय

नित पूजा जप ध्यान ध्याने सुधी सुदामा ।
 रहथि करथि मत्त धर्म भोग सुख संपति धामा ॥
 श्री राधागोविन्द कमल पद उरमे राखिथि ।
 नृत छन नित दिन अण्ण अति गुणगण मुख भाखिथि ॥
 श्री मधुभागवत आदिनिन कहथि कदावधि नेमसो ।
 श्री गोविन्द श्री हरि सकल सुनथि सुनाथि प्रेम सो ॥

छप्पय

नितकर भक्ति विशेष प्रभुहि अस्नात कगावधि ।
 धूप माल धनभाज सुखसिद्ध मलक खटावधि ॥
 नित छप्पन परकार मोद प्रभु भोग जगावधि ।
 दान मान सो दीन दुख जाचकनि जुहावधि ॥
 नूतन मंगल होय नित सदावत पक द्वार मे ।
 अरित सुदामा विहित अछि व्याधहुधरि संसार मे ॥

चौपाइ

बलि सुदा कृष्ण विलास ।
 काल लिखल हनिद्वन दास ॥
 विष्णुपदहि आखा हम कयल ।
 ते मयहक सरनापन धयल ॥
 अह नामि छेमक से दोष ।
 करजोरि दिनय करिअ भरिपोल ॥

श्री गोविन्द पुराता भाष ।
हुनके छन्द सभ घर-घट भाष ॥

दोहा

बिनु कहने सुनने प्रभु क गुणगण क्या सजोति ।
अकिन्त ते होय ते तरिय भव, कहिय रात्रि अह नीति ॥

"समाप्त"

— • —

श्री शिवजीक

गंगाधर हर शूलधर शशिधर शंकर नाम ।
सदैव भव शंभु शिव रुद्रकाम रिपुनाम ।
शूलोत्थम्बक त्रिपुर हरि ईश उमापति होय ।
जाटल पिनाकी पट्टपति नीलकण्ठ शिव सोय ।

भजन

ध्यान भगन छवि नगन महादेव लगन रहल दिन और
नारद चटकक खोज ने पाबिय शिवगति कठिन कठोर ।
जौ मन छैन्ह विवाह करे केर बेजगु सदासी ध्यान
नहि तौ सुध हमर अनु दारय करय गौरि घर आन
मुनिअन्ह हुनका घर आंगन नहि नहि देखो माए ते बाप
रुख गुण्ड केर माला कर गहि सबत करे छवि जाप
भाग धूपूर अहार कराय नित विविधि जटा खै रांग
परिधन वसन एको नहि मुनिअन्ह भसम लगावयि अंग
चन्द्र भाल सिर जटा ताहिपर छत्र वासुकी नाग
अग्नि धुनौ लग बसदा एक दिस एकदिस पैसल बाघ
एहना ठाम विधा कोना गमोतीह करतीह कोन उपाय
कन्या लग हम कतहु परावक के करत एहन जमाए
मारद चटक चटक यह आनवि जौ मोता एहि टोल
राजतन जतेक करय हम हुनकर जूनत लोक से बोल

नन्ददास कह सुनिय मनाइन शिवहि सकल अग जान ।
गौरीक नाह विद्याला लिखलन्हि हर ईश्वर भगवान ॥

२

आगे माइ आम कोन करन उवाए ।
सात आठ नौ बरख बिनि गेल सुख बिल बल जाए ।
ककरा हाथ समाइ पठाएव के जायत कैलास ।
के कहि सुनि कै ध्यान जोगभोत दिगम्बर कृतिवास ॥
इन्द्र कुबेर विष्णु ब्रह्मादिक ई सभ देवता छावि ।
हमरहि कन्याक भाल लिखल जल तपसी नाह भिखार ॥
स्वामी हमर ने दुइ आठमा नहि जानमि छौ पाँच ।
भूठ फूसि जे नारद कहलन्हि से सभ बुझलन्हि छौच ॥
जे एहि घर छे न्याह करौताह तन्हिक देखव हम दर्प ।
जकरा किछु नहि विभव वस्त्र धरि जपटल देखमे सर्प ॥
जौ भल चाहि स्वामि हमरौ नारद बचन देख्यारि ।
कथा करयु अनते दोसर घर कहि वै छी परचारि ॥
नहि तो एइ आंगन संपति निज कप जेथु ठोकि बजाए ।
नैहर कन्या सहित पराएव घरमे आगि जगाए ॥
एहन जमाए दोसर नहि पाओत बुझि पइत पसबाव ।
हम कैलास जाइछी एहिजन घर लय आविय रने ।
कन्यादान निवेरि सुदित मन करिय मनोरथ पूर्ण ॥

नन्ददास कह सुनिय मनाइन कइत सदा स तिचारि ।
कन्या आदि भवानी दुर्गा वर ईश्वर त्रिपुरारि ॥

३

मंगल साधव नाम उचार ।

गल बदन कमल कर मंगल मंगल अनक सदा शोभा ॥
देखेत मंगल पुजैत मंगल गावधि मंगल चरित उदार ।
गल सुवन कथा रस मंगल मंगल तन बसुदेव कुमार ॥
गोकुल मंगल मधुवन मंगल मंगल कवि वृन्दावन चन्द ।
मंगल करण गोवर्धनचारी मंगल भेष यक्षोमति नन्द ॥
मंगल धेनु रेणु भुव मंगल मंगल मधुर बजावधिबेणु ।
मंगल गोवधू परिरंभने मंगल कालिन्दिक धेनु ॥
मंगल चरख कमल मणि मंगल कीरति जगत निवास ।
मनुदित मंगल स्थान धरत मुनि मंगल मति परमानन्दवास ॥

महेश्वानी

नारद चटक चटक जौ आतल शंकर सहित समाज ।
मन्दा विठि आरुद मरदेव ने डर छेन्हि नहि लाज ।
मन्दी भैरौ भूत प्रेत गन केभो विनु सिर बिनु हाथ ।
मोका मंगड़ा गुंगा खारा रीह खन धिक परिभात ।
बर कर हमर त्रिशूल जटा सिर खन बासुकी मोर ।
परिचन अंग भुजंग बसन मानु रीह पुनि हाइक जोर ।
हमरु बाजा घातए छिमि छिमि करु बरिभासी घोल ।
गरिब्य चलकी जखन मनाइनि भयगेल गंडम गोल ॥

ढाला लावा देखि बासुकी चुनि चुनि लगलाह साए
लएकय सहित मनाइनि गाइनि विधिकरि बजली पराए
नारद सचहि समोधन विधिवत परिब्रज तखन जमाव
दुर्गा शिवक विवाह कथा जे गाओल करत बखान
नन्ददास कह तन्दिह सनोदध पुरवहि भी भगवान

श्री जगदम्बापुकार

जय जय जय जगदम्ब अम्ब हम छी शरणागत ।
आशा अखि जे आइ हमर सभटा दुख भागत ।
बलबुद्धि बिद्या विभवहीन हम छी जगदम्बे ।
एहन समय मे एकमात्र अहाँ छी अवलम्बे ।
परस पाबि न रहहि केओ दीन दुष्ट जन घालिके ।
दीनदास निज जानि माँ आरा पूर्ण कह कालिके ॥१॥

मधुकैटभ सँ प्रसित पितामह केर दुखटारक ।
जकरा भी मगवान भरल रण मे भूष मारक ।
अदिक कुरा सँ भेल कार्य मझा मुख पावक ।
आरत दुख शरणार्थ कहहु नहि देरि लगवक ।
आदि राखि जगसारणी निज जन सुत सम पालिके ।
दीनदास निज जानि माँ आरा पूर्ण कह कालिके ॥२॥

महिषासुर एकमेव देवगण केँ दुख देखक ।
ओर कथा की कह छीनि इन्द्रासन सेवक ।
पूजा, जप, तप, होम मही सँ दीन करौलक ।
कलेगित मरगण देखि यज मे ताहि हरौलक ।

प्रहित हति ताहि माँसुर दुख दवरासि भालिके ।
न दास निज जानि माँ आरा पूर्ण कह कालिके ॥३॥
कुम्भ-निकुम्भासुर अस्तीम बसराओ भेल जस ।
स्वर्ग मर्य पाताल विहित जस करि अवना बस ।
रक्त गोल कम योयधान सेनप जस जकरा ।
कुम्भ-निकुम्भाधिक बलिष्ठ सेनापति तकरा ।
पुर हिम सारज सबहि केँ निरि पर माँ खिरमालिके ।
दीन दास निज जानि माँ आरा पूर्ण कह कालिके ॥४॥
मीथक मूढि हकिमनि नाम सँ जन्म होल अहँ ।
मान घटाओल जरासन्ध शिशुपाल रुक्म कहँ ।
कृष्ण प्रिया भय मातु दारका मे अहँ ऐलहुँ ।
पुर परिजन केँ अहाँ.....सुख देखहुँ ।
अब जब जब हरिमामिति मकरध्वज प्रविपालिके ।
दीन दास निज जानि माँ आरा पूर्ण कह कालिके ॥५॥